# Journal of Research and Development

Peer Reviewed International, Open Access Journal.

ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

Original Article

# सागर संभाग में अन्य अकृष्य भूमि पर सामाजिक वानिकी की संभावनाऐं

**डॉ. बीरेन्द्र कुमार अहिरवार[1], डॉ. विनय रैकवार[2]**

[1]विभागाध्यक्ष भूगोल शासकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय निवाड़ी जिला – निवाड़ी (म.प्र.)

[2]अतिथि विद्वान (भूगोल) शासकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय निवाड़ी जिला – निवाड़ी (म.प्र.)

**Email:** birendrak261@gmail.com

**Manuscript ID**:

JRD -2025-170847

ISSN: 2230-9578

Volume 17

Issue 8(B)|

Pp. 245-248

Aug 2025

**Submitted:** 18 July. 2025

**Revised:** 03 Aug. 2025

**Accepted:** 18 Aug. 2025

**Published:** 31 Aug. 2025

***शोध सारांश –***

*सामाजिक वानिकी एक प्रभावी रणनीति है, जो पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हुए, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाए रखती है। सागर संभाग मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसमे अधिक मात्रा में अन्य अकृष्य भूमि उपलब्ध हैं, जिसे वनीकरण के लिए उपयोग किया जा सकता है, यह शोध–पत्र सागर संभाग में सामाजिक वानिकी की संभावनाओं का विश्लेषण करता है, विशेष रुप में उन अन्य अकृष्य भूमि पर जो कृषि के लिए अनुपयुक्त है।*

**प्रस्तावना**

भारत जैसे विकासशील देश में बढ़ती जनसंख्या एवं औद्योगीकरण के कारण वनों की कटाई एवं भूमि की गिरावट एक गंभीर समस्या वन गई है। सामाजिक वानिकी (Social Forestry) इस समस्या का एक प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है। यह अवधारणा 1976 में भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित की गई थीं, जिसका मुख्य उद्देश्य वन संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना था।

वनों के विनाश के कारण मृदा क्षरण हो रहा है। जिससे अनेक प्रकार की पर्यावरणीय समस्याऐं पैदा हो रही व मृदा क्षरण से नदियों में जल के साथ मृदा पहुँचने से वाढ़ जैसे समस्याऐं बढ़ती जा रही है। वन विनाश से इमारती लकड़ी व जलाऊ लकड़ी मिलना कम हो गया व वनों पर आधारित उद्योगों के लिए कच्चा माल मिलना बहुत कम हो गया है। वन वायुमण्डल की नमी को सोखते रहते हैं व गर्मी को कम करते है, किन्तु इनके अभाव में वायुमण्डल अपेक्षाकृत गर्म हो जाता हैं, जिससे मानव जीवन प्रभावित होता है। वन विनाश से जलवायु परिवर्तन हो रहा है। तथा उनसे पर्यावणीय समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं

सागर संभाग बुन्देलखण्ड क्षेत्र का हिस्सा व प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न होने के वावजूद भी पर्यावरणीय रुपी सामाजिक वानिकी जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। यहां अन्य अकृष्य भूमि जैसे कि वंजर भूमि, चारागाह ,नदी किनारे की खाली भूमि और सड़क किनारे की राजस्व भूमि को भी सामाजिक वानिकी के तहत विकसित किया जा सकता है।

**उद्देश्य –**

प्रस्तुत शोध – पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. सागर संभाग में अन्य अकृष्य भूमि की उपलब्धता का अध्ययन करना ।
2. समाजिक वानिकी के अन्तर्गत उपयोग की जाने वाली विधियों का विश्लेषण।
3. सामाजिक वानिकी के तहत तहसीलो का अध्ययन करना।

**अध्ययन क्षेत्र –**

सागर संभाग $23^{0}10^{I}$ उत्तरी अक्षांश से $26^{0}35^{I}$ उत्तरी अक्षांश तथा $78^{0}4^{I}$ पूर्वी देशांतर से $80^{0}34^{I}$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इस संभाग में 6 जिले सागर, छतरपुर, पन्ना ,दमोह, टीकमगढ़ और निवाड़ी सम्मिलित व इस संभाग के उत्तर में उत्तर प्रदेश स्पर्श करता है। पूर्व में शहडोल संभाग दक्षिण में जबलपुर संभाग एवं परिश्चम में भोपाल संभाग हैं। इसका क्षेत्रफल 38428 वर्ग किलोमीटर है।

***Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)***

*This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.*

**Address for correspondence:**

*डॉ. बीरेन्द्र कुमार अहिरवार, विभागाध्यक्ष भूगोल शासकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय निवाड़ी जिला - निवाड़ी (म.प्र.)*

**How to cite this article:**

*अहिरवार, . बीरेन्द्र . कुमार ., & रैकवार, . विनय . (2025). सागर संभाग में अन्य अकृष्य भूमि पर सामाजिक वानिकी की संभावनाऐं. Journal of Research and Development, 17(8(B)), 245–248. https://doi.org/10.5281/zenodo.17254859*

Quick Response Code:

Website: https://jrdrvb.org/

DOI: 10.5281/zenodo.17254859

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

**शोधप्रविधि –** प्रस्तुत शोध–पत्र द्वितीयक आकड़ो पर आधारित है। इन आंकड़ो की सहायता से निम्नलिखित सूत्र द्वारा संभाव्यता सूचकांक ज्ञात किया गया है।

$$\text{संभाव्यता सूचकांक} = \frac{\text{अन्य अकृष्य भूमि}}{\text{कुल वन भूमि}} \times 100$$

उक्त सूत्र की सहायता से निकाला गया संभाव्यता सूचकांक निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

**मानचित्र –।**

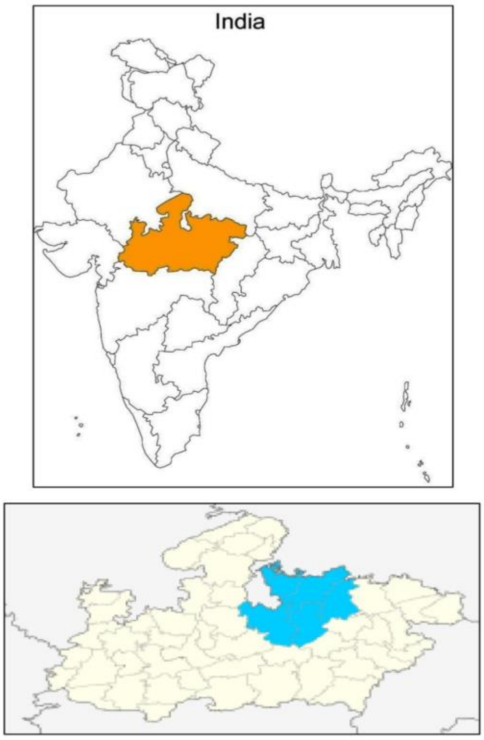


भारत एवं मध्यप्रदेश के मानचित्र में प्रदर्शित सागर संभाग की स्थिति

सागर संभाग

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

**तालिका 1.1**

**सागर संभाग में सामातिक वानिकी सम्भाव्यता**

| क्र. | तहसील | कुल भूमि क्षे.हेक्टे. हजार में | वन्य क्षेत्र हेक्टेयर हजार में | अन्य अकृष्य भूमि हेक्टे0 हजार में | सम्भाव्यता सूचकांक |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | निवाड़ी | 6.18000 | 6.18000 | 5.40 | 87.37 |
| 2 | पृथ्वीपुर | 4.05000 | 4.05000 | 4.42 | 91.63 |
| 3 | जतारा | 9.02000 | 9.02000 | 2.84 | 31.49 |
| 4 | पलेरा | 5.74000 | 5.74000 | 3.55 | 61.85 |
| 5 | बल्देवगढ़ | 4.40000 | 4.40000 | 6.38 | 1.45 |
| 6 | टीकमगढ़ | 4.91000 | 4.91000 | 5.63 | 114.67 |
| 7 | गौरीहार | 2.93000 | 2.93000 | 5.72 | 195.261 |
| 8 | लौंडी | 6.66000 | 6.66000 | 4.73 | 71.03 |
| 9 | नौगांव | 5.85000 | 5.85000 | 4.93 | 84.28 |
| 10 | छतरपुर | 7.14000 | 7.14000 | 7.64 | 107.01 |
| 11 | राजनगर | 13.89000 | 13.89000 | 8.16 | 58.75 |
| 12 | बड़ामलहरा | 36.26000 | 36.26000 | 0.26 | 0.72 |
| 13 | विजावर | 42.22000 | 42.22000 | 14.64 | 34.67 |
| 14 | अजयगढ़ | 42.81000 | 42.81000 | 1.89 | 4.42 |
| 15 | पन्ना | 57.32000 | 57.32000 | 0.98 | 1.71 |
| 16 | गुन्नौर | 15.52000 | 15.52000 | 1.46 | 9.41 |
| 17 | पवई | 40.66000 | 40.66000 | 1.41 | 3.47 |
| 18 | शाहनगर | 45.35000 | 45.35000 | 0.91 | 2.01 |
| 19 | बीना | 1.04000 | 1.04000 | 9.55 | 918.27 |
| 20 | खुरई | 25.05000 | 25.05000 | 4.48 | 17.89 |
| 21 | वण्डा | 39.37000 | 39.37000 | 9.29 | 23.60 |
| 22 | राहतगढ़ | 23.33000 | 23.33000 | 6.54 | 28.04 |
| 23 | सागर | 21.02000 | 21.02000 | 12.33 | 58.65 |
| 24 | गढ़ाकोटा | 7.42000 | 7.42000 | 5.08 | 68.47 |
| 25 | रहली | 15.13000 | 15.13000 | 9.49 | 62.73 |
| 26 | केसली | 49.64000 | 49.64000 | 9.13 | 18.39 |
| 27 | देवरी | 45.52000 | 45.52000 | 8.24 | 18.11 |
| 28 | हटा | 32.85000 | 32.85000 | 6.98 | 21.25 |
| 29 | पटेरा | 27.27000 | 27.27000 | 3.33 | 12.22 |
| 30 | बटियागढ़ | 63.32000 | 63.32000 | 6.54 | 10.32 |
| 31 | पथरिया | 2.22000 | 2.22000 | 3.24 | 145.95 |
| 32 | दमोह | 33.53000 | 33.53000 | 2.47 | 7.37 |
| 33 | जबेरा | 26.84000 | 26.84000 | 4.61 | 17.18 |
| 34 | तेंदूखेड़ा | 57.92000 | 57.92000 | 5.39 | 9.30 |
| | **औसत** | **2419000** | **24.19000** | **5.52** | **74.82** |

**विश्लेषण –**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सागर संभाग में कुल वन क्षेत्र 10,014.42 हेक्टे0 है।जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 26.07 प्रतिशत है। सागर जिले के 2713.63 हेक्टेयर अर्थात 26.49 प्रतिशत क्षेत्रफल पर वन आच्छादित है। सागर के उपरांत छतरपुर जिले में 1722.56 हेक्टे0 अर्थात 19.83 प्रतिशत भूमि पर दमोह जिले में 2504.49 हेक्टे0 अर्थात 34.29 प्रतिशत भूमि पर पन्ना जिले में 2691.93 हेक्टेयर अर्थात 37.73 प्रतिशत क्षेत्रफल पर टीकमगढ़ जिले में 274.56 अर्थात 7.38 प्रतिशत भूमि पर और निवाड़ी जिले में 107.55 हेक्टेयर अर्थात 8.13 प्रतिशत् पर वनो का विस्तार है।

संभाग की तहसीलों के वन क्षेत्रों के आकड़ों को देखने से स्पष्ट होता है कि सागर जिले की वाटियागढ़ तहसील में 63.32 हजार हेक्टेयर भूमि पर वनो का विस्तार है। जबकि सागर जिले की ही वीना तहसील में 1.04 हजार हेक्टेयर भूमि वनों से आच्छादित है। जो संभाग में सबसे कम है। सम्भाव्यता सूचकांक सबसे अधिक सागर जिले की बीना तहसील का (918.27) हजार हेक्टेयर है। यह वन्य क्षेत्र 1.04 हेक्टे0 हैं जबकि अन्य अकृष्य भूमि 9.55 हजार हेक्टे0 है। दूसरे स्थान पर संभावयता सूचकांक (195.26) गौरीहार तहसील का है। यहां वन्य क्षेत्र 2.93 हजार हेक्टे0 तथा अन्य अकृष्य भूमि (5.72) हजार हेक्टे0 है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

सागर संभाग की बीना तहसील में सबसे कम वन क्षेत्र 1.04 हजार हेक्टे0 है। जबकि यहाँ अन्य अकृष्य भूमि 9.55 हजार हेक्टे0 हैं, यह पर सामाजिक वानिकी सूचकांक अधिक है। इस कारण यहां सामाजिक वानिकी की अपार संभावनाऐं।

सागर संभाग की 34 तहसीलो में से 26 तहसीले ऐसी है। जिनका संभाव्यता सूचकांक संभाग के औसत सम्भाव्यता सूचकांक (74.82) से कम हैं। ऐसी तहसीले क्रमशः (0.72 ) बड़ा मलहरा, 1.41 बल्देवगढ़, 1.71 पन्ना, 3.01 शाहनगर, (3.47) पवई , (4.42) अजयगढ़ , (7.37) दमोह, (9.30) तेंदूखेड़ा , (9.41) गुन्नौर , (10.32) बटियागढ़, (12.22) पटेरा , (17,78) जवेरा , (17.89) खुरई , (18.11) देवरी , (18.39) केशली, (21.25) हटा, (23.60) बण्डा, ,(28.04) राहतगढ़ , (31.49) जतारा, (34.67) विजावर , (58.65) सागर , (58.75) राजनगर , (61.85) पलेरा , (62.73) रहली, (68.47) गढ़ाकोटा और (71.03) लोड़ी आदि है।

**निष्कर्ष एवं सुझाव –**

संभावना उच्च सूचकांक तहसीलों में सम्मलित सामाजिक वानिकी की संभावनाए अधिक व सामाजिक वानिकी से क्षेत्रीय जनसंख्या के लिए लकड़ी चारा, एवं शुद्ध वातावरण की प्राप्ति होगी पर्याप्त जलाऊ लकड़ी प्राप्त होने से गोवर का ईधन के रुप में प्रयोग न होकर खाद के रुप में और गोवर गैस प्लॉट के रुप में उपयोग हो सकेगा। इससे मिट्टी की उर्बरा शक्ति में वृद्धि होगी एवं अन्य अकृष्य भूमि का समुचित उपयोग हो सकेगा इससे ग्रामीण के आर्थिक विकास में सुधार होगा तथा वनो पर आधारित कुटीर उद्योगो फर्नीचर बीड़ी ,टोकरी निर्माण रस्सी निर्माण ,लाख ,गोद, कत्था आदि से सम्वंधित कच्चे माल की आपूर्ति हो सकेगी।

सागर संभाग में सामाजिक वानिकी की संभावनाऐं अधिक हैं, इस हेतु निम्न लिखित सुझाव दिया जा सकते है।

1. मध्य उच्च पर्वतीय पठारी तथा अम्लीय भूमियों में सीमित सुझाव उपरांत सामाजिक वानिकी की संभावनाऐं ढूढ़नी चाहिए।
2. पंचायतों की अतिरिक्त भूमियों खेतों की मेड़ो, नदियों तथा नहरों की तट भूमियों, तथा सड़कों के किनारे एवं बंजर भूमियों पर नीम, शीसम, सागौन , आम, महुआ , जामुन तथा साल आदि के रोपड़ की संभावनाऐ।
3. सागर संभाग में स्थित बांधो पर वृक्षारोपण वन विभाग के माध्यम से किया जा सकता है।
4. राजघाट बांध परियोजना के अंतर्गत अनेक भागों में माईनर बनाये गये है। जिनके दोनों किनारों पर वृक्षारोपण कराया जाये।
5. सागर संभाग की वीना तहसील में संभाव्यता सूचकांक सबसे अधिक है।

अतः यहाँ सामाजिक बानिकी की संभावनाऐं अधिक है।

6. गौरीहार , पथरिया, टीकमगढ़, छतरपुर, पृथ्वीपुर, नौगांव आदि में भी सामाजिक वानिकी की अपार संभावनाऐं है। अतः यहां बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कराया जाना चाहिए ।

यदि वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जाता है, और अधिक से अधिक वृक्ष लगाए जाते है, तो संभाग के लोंगो को रोजगार मिलेगा भू–प्रबंधन होगा, मृदा अपरदन समस्या कम रहेगी, एवं खुशहाल वातावरण की प्राप्ति होगी।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची –**

1. हुसैन मस्जिद (2002) व्यवस्थित कृषि भूगोल, इंण्डिया पब्लिकेशन दिल्ली।
2. पाण्डेय जे.एन. और कमलेश एस. आर. (1999)कृषि भूगोल, वसुंधरा प्रकाशन गोरखपुर।
3. बंसल पी.सी.(1987) भारत की समस्याओं की कृषि, नई दिल्ली।
4. द्विवेदी ए.सी. एवं चतुर्वेदी ज. क. (1997) भू–प्रबंधन एवं संरक्षण हरियाणा साहित्य अकादमी चंदीगढ़।
5. Chauhan D.S. : (1960) studies in the utilization of land.
6. Chandra Shekhar : A.R. (1976) Agriculture land use and Nutrition in Rajgarh District of M.P. Unpublished Ph.D. Thesis R.S. University Raipur.
7. कुमार प्रमीला एवं शर्मा श्री कमल (2000) कृषि भूगोल मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल ।